15563

* श्री *

* श्री जानकी बल्लभोविजयतेतराम *

* श्रीसरयू देव्यैनमः *

* सरयू बधाई पद *

श्री १००८ श्रीपुरुषोत्तमशरण जी महाराज के आज्ञानुसार
रामायणी श्रीविदेहियाशरण जी महाराज ने लिखवाया और
छपवाया सियानाथशरण श्री सद्गुरु पुरुषोत्तम भवन
गोलाघाट श्री अयोध्या जी।

मुद्रकः—श्रीहनुमत् प्रेस, श्री अयोध्या जी।

प्रथमवार २५०] सन् १९७० ई० [मूल्य १ रु० २५ पैसे

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
अयोध्या
श्री मणिराम दास छावनी सेवा ट्रस्ट

* श्री *

* जानकी बल्लभोविजयतेतराम *

* श्रीसरयू देव्यैनमः *

* सरयू बधाई पद *

* बधाई पद १ *

पूरन ब्रह्म सनातन कहिये सरजू बेद बखानी ॥
ब्रह्मलोक से धारा आई उचरत जै जै बानी। निसि दिन सरजू बहत दूध की मूरख जाने पानी ॥ १ ॥ स्वर्गद्वार पर सहस्त्रों धारा मुक्ति भरै जहँ पानी ॥ निसिदिन सरजू लहर लेत हैं बोलत मधुरी बानी ॥ २ ॥ रामघाट स्नान करन को आये हैं मुनि ज्ञानी ॥ रघुबर लक्ष्मण भरत शत्रुहन श्रीहनुमत अगवानी ॥ ३ ॥ सरजू तीर अयोध्या नगरी अवधपुरी रजधानी ॥ शिव-सनकादि आदि ब्रह्मादिक सेवत हैं मुनि ज्ञानी ॥ ४ ॥ तुलसिदास सरजू की महिमा श्री मुख आप बखानी ॥ ५ ॥

* पद २ *

सरजू राम रूप जग माहीं ॥
पाप ताप जेहि निकट न आवै नाम सुनत भग जाहीं। जाके निकट रामपुर सुन्दर छवि बरनी नहिं जाहीं ॥ १ ॥ चन्द्र सूर्य दोउ देखि थकित भये आगे चलि नहि जाहीं। दूध कि धार प्रभाव अमित अति रामजन्म रजधानी ॥ २ ॥ राजा दशरथ गृह नौबत बाजे घर घर बजत बधाई ॥ बिबिध भांति के घाट

बने हैं रहैं मुनी जहँ छाई ॥ सरजू दरस परस करि मज्जन राम धाम चलि जाई ॥ ३ ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन संग सखा सुखदाई । ठाढ़े सरजू लहर निहारैं मगन भये रघुराई ॥ ४ ॥ महिमा बरनत गिरा निरंतर निगम नेति यश गाई ॥ शेष सहस मुख रटत निरंतर तबहूँ पार न पाई ॥ ५ ॥ सकल देव सुर सिद्ध निहारैं मज्जन करैं रघुराई । गोकुलदास छबि निरखि राम की चरण कमल लपटाई ॥ ६ ॥

❀ पद ३ ❀

बजत बधाई नवल रंग भीनी श्री सरजू को जनम भयो ॥

जेठ मास की परब सुहावनि मंगलमय शुभगान ठयो ॥ १ ॥ जोग लगन ग्रह वार सबै तब सुखद सुसुन्दर आय परे। नर नारी पूजन दरसन हित आये छबि लखि मगन खरे ॥ २ ॥ अवधपुरी में उत्सव घर घर मंगल साज सजाई। नाचत गावत भो मन भावत संपति बहुत लुटाई ॥ ३ ॥ जय जयकार भयेउ त्रिभुवन में सुकृत बढ़ेउ समुदाई। सरजू नाम लेत अघ नासे सुख सबके उर छाई ॥ दरस परस मज्जन की महिमा बेद बिदित नहिं गोई। सिय पिय निज ढिग बास श्री मुख कह प्रयास विन होई ॥ ५ ॥ शीतल स्वच्छ मधुर शुचि सुन्दर दिव्य भव्य प्रकाशा। हिम कपूर अमृत शुभ साधन चंद मद ब्रह्मभाषा ॥ ६ ॥ जल प्रवाह लखि ध्यान सुकीजे नवल बधू इव सरिबर रूपा। देहीं देह विभाग रहित नित तुरिया बपुष अनूपा ॥ ७ ॥ बीची नवल दुकूल कमल मुख सोन नील इक्षण कजरारे। कुमुद चारु मुसक्यान मनोहर केश विसाल सिवार ॥ ८ ॥ भूषन भवर अनेकन आवृत प्रति अंगन छवि छाई। महलन के प्रतिबिंब परत जल जगमग ज्योति लखाई ॥ ९ ॥ सीय रमन को

रस बरसावत कुंजनि बननि समानी। प्रेम मोद को मानस नन्दनि सब प्रकार मुद दानी ॥ १० ॥

❋ पद ४ ❋

आज बधाई वर सरिता की नाम सरजु सुखदाई ॥
रघुनन्दन के नयन कमल से प्रेम धार प्रगटाई ॥ १ ॥ मुनि बसिष्ठ इक्ष्वाकु विनय सुनि निज पितु लोक सिधाए। माँगि विधिहि मानस तेलै के अवध-पुरी चलि आए ॥ २ ॥ त्रिभुवन में आनन्द भयो सुनि बाजन लागी बधाई। मंगल गावत सब नर नारी उत्सव साज सजाई ॥ ३ ॥ देव निशान बजावत नाचत सुमन माल बरसाई ॥ दुहुँ तट भीर भई मन भावन पूजन आए लोग लुगाई ॥ ४ ॥ धूप दीप नैवेद्य बिबिध बिधि आरति करत सुहाई। पुष्पाञ्जलि जल पट मनि भूषन वारि सुलेत बलाई ॥ ५ ॥ जय धुनि करि सब स्तुति करहीं गुन महिमा दरसाई। सीताराम बिहार करनहित बहत धार छबि छाई ॥ ६ ॥ मंगलमय रस भक्ति बढ़ावति जनम मरन दुख हारी। काल कर्म गुन दोष सुभावहि नासक सुचि रुचि वारी ॥ ७ । सुर तरु वरसे अधिक तीर के वृक्ष अक्षय मुद दानी। वैकुंठहु से बहुत रम्य तर दुहुँ तट महल सुहानी ॥ ८ ॥ सुरसरि सारद भानु नंदनी गोदावरि कावेरी। मेकल सुता आदि तव पदरज सेवत वनि नित चेरी ॥ ९ ॥ अघ नासत निज थलहि जनन के किंचित प्रभुता सेइ लहे ॥ तव प्रसाद सामर्थ सुजस जग सब तिर्थन में छाय रहे ॥ १० ॥ तावत कृपा कटाक्ष सिया बर रीझि न कबहूँ हेरे। जावत तरल तरग दृष्टि पथ द्योत न सरजू तेरे ॥ ११ ॥ बिष्णु बिरचि महेश देव सब भक्ति सहित नित कूले। तव पद पंकज सेवन में रत रहत मगन सुख

फूले ॥ १२ ॥ प्रेम मोद को सरन राखिये विनय करौं कर जोरे। तब तट कुंजनि युगल केलि सुख दरसइ दृग निसि भोरे ॥ १३ ॥

* पद ५ *

जनम महोत्सव श्रीसरजू को नौबत बजत सुहाई ॥

श्री बासिष्ट के भवन रसीली गावत नारि बधाई ॥ १ ॥ अवध नगर में मंगल रचना घर घर सबहि बनाई। कदलि पुंग अरु ध्वजा पताका गजमनि चौक पुराई ॥ २ ॥ बंदन माल बितान साथियाँ कलस दीप धरवाई। मारग सुमन बिहाइ बिबिध रंग अतर गुलाब सिंचाई ॥ ३ ॥ मागध सूत बन्दि नट जाचक वरनत जस सुखदाई ॥ नर नारी सब देत निवछावरि अमित वस्तु हुलसाई ॥ ४ ॥ जहँ तहँ बिप्र बेद धुनि करहीं सरि पूजन करवाई ॥ धेनु बसन मनि कनक विभूषन पावत दान अघाई ॥ ५ ॥ देव वधुन संग देखन आए नभ बिमान रहे छाई ॥ सुमन बरसि सब नाचत गावत हरषि निशान बजाई ॥ ६ ॥ रवि कुल गुरु को नाम सुजस शुभ तिहुँपुर में प्रगटाई ॥ सत् चिद् आनन्द रूप प्रेम जल राम नयन से आई ॥ ६ ॥ ब्रह्म पात्र मानस होइ अवधहि आय कीन्ह स्थाई ॥ प्रेम मोद सिय बरहि सुप्यारत इक्ष्वाकु बंश की धाई ॥ ७ ॥

* पद ६ *

बरसगांठ श्रीसरजू जी की सुपद सुहावनि आई ॥

गावत नागरि नवल बधाई प्रेम उमंग बढ़ाई ॥ १ ॥ बाजत बीन मृदंग ताल मिलि अपर जंत्र समुदाई। उघटत छंद प्रबन्ध मनोहर राग मधुर स्वर छाई ॥ २ निरतत नवल नटी पट फहरत भाव कलन दरसाई। ढाँढ़ि भाड़ करत

बहु कौतुक रूप अनेकन लाई ॥ ३ ॥ देखत सब सुख सिन्धु मगन होइ देह दशा बिसराई ॥ हाट बाट घर बाहर द्वारे भीर भई बहुताई ॥ ४ । अति उत्साह भरे नर नारी बाँटत सबहि बधाई । गुरु पुत्री के गुन गन बरनत अरुन्धती की करत बड़ाई ॥ ५ ॥ बिधि सुत नन्दिनि त्रिभुवन बन्दिनि मुनि चकोर चय चन्दनि ॥ पाप निकंदिनि जनमन रंजनि जनम मरन दुख-भंजनि ॥ ६ ॥ प्रेम मोद को मानस लाड़िलि अपने शरण लगावो । इष्ट नाम गुन धाम चरित सुख संतत हिय सरसावो ॥ ७ ॥

❋ पद ७ ❋

प्रगटीं श्री सरजू सुखदाई ॥

अमल मास बर जेष्ठ शुकुल तिथि पूरनमासी आई ॥ १ ॥ श्री बसिष्ठ जी के सुभग सुआश्रम बाजत अनंद बधाई ॥ माई अरुन्धती आँगन में ऋषि पतिनी जुरि आई । २ ॥ केशर कुमकुम मृगमद चन्दन गजमनि चौक पुराई ॥ तेहि पर मंगल कलश धरे सजि सुन्दर दीप रचाई ॥ ३ ॥ आज अवधपुर खुले खजाने जो माँगे सो पाई ॥ सिय सनेह को मिले सु यही सरजू तट वर है वास सदाई । ४ ॥

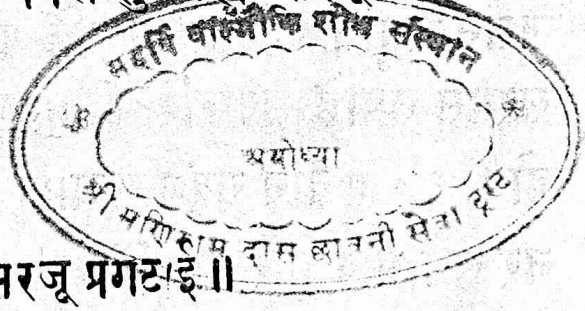

❋ पद ८ ❋

मंगलमय शुभ दिवस उदय भयो श्री सरजू प्रगटाई ॥

श्री सियपिय अनुराग दिव्य जल भूपर दियो बहाई । १ ॥ भवभय त्रिसित विविध जीवन हित कृपा बिबस रघुराई ॥ निज प्रापति साकेत धाम की सीढ़ी सुदृढ़ लगाई ॥२॥ जो मजुहि मम धाम सिधावहि आवा गमन मिटाई ॥ मम समीप ते बसहि निरंतर मम सेवा सुखपाई ॥ ३ ॥ श्री कौशलपुर नये नये

उत्सव गृह गृह बाज बधाई॥ सिय सनेह आनन्द बढ़ो नित त्रिभुवन रहो समाई ॥ ४ ॥

❀ पद सोहर ६ ❀

अवध नगर मन भावन अति छवि छावन हो॥ ललना सरजू जी को जन्म सुहावन पावन हो॥ १ ॥ जेठ मास ऋतु ग्रीषम पूरनमासी हो॥ ललना प्रगट भईं ऋषि कुवँरि दिव्य सुखरासी हो ॥ २ ॥ जय धुनि मंगल गान निशान बजावहि हो॥ ललना देव विमान बनाय व्योम भल राजहिं हों॥ ३ ॥ उमगि उमगि सुर नारि सुनाचहि गावहि हो॥ ललना सुमन सुगंध अपार हरषि बरसावहिं हो॥ ४ ॥ बाल युवा युत बृद्ध नारि नर धाये हो॥ ललना भई भीर सरि तीर दुहूँ तट भाये हो॥ ५ ॥ फरस वितान अपार चौक घट राजहिं हो। ललना चन्दन बन्दन माल साथियाँ साजहिं हो ॥ ६॥ रंभा बाँस रसाल पुंग तरु रोपहिं हो। ललनाध्वज पताक फहराहिं रंग बहु ओपहिं हो ॥७॥ बन्दी मागध सूत सुजश उच्चारहिं हो॥ ललना विप्र बेद धुनि करहिं शांति विस्तारहिं हो॥ ८॥ धूप दीप नैवेद्य आरती करिके हो॥ ललना स्तुति करि सब नवहिं माथ महि धरिके हो॥ ९ ॥ मणि भूषण पट सरवस सबहिं सुवारहिं हो॥ ललना जाचक पाय अघाय अशीश उचारहिं हो॥ १० ॥ वीन मृदंग सुआदि साज सब बाजहिं हो॥ ललना नटहि नारि नर सबै भाव भरि गाजहिं हो॥ ११ ॥ सुर किन्नर गन्धर्व देखि सुनि मोहहिं हो॥ ललना दिव्य अलौकिक जानि प्रशंसि सुजोहहिं हो॥ १२ ॥ श्रीसरजू जी के जनम जो सोहिलो गावहिं हो॥ ललना सीय रमण ढ़िग बास महल सुख पावहिं हो॥ १३ ॥ प्रेम मोद रसखानि सरित बर सेवहिं हो॥ ललना बिपिन प्रमोद निवास केलि सुख लेवहिं हो॥ १४ ॥

* पद सोहर १० *

श्री रघुकुल मनि रामसुवहिनी खेलावहिं हो ॥ ललना नख सिख अंग अनूप देखि सुख पावहिं हो ॥ १ ॥ धरि कर कमल सुचरन हिये लपटावहिं हो ॥ ललना अरुन मंजु तल त्रिन्ह निरखि वलि जावहिं हो ॥ २ ॥ नख दुति अमल प्रकास भास छवि अद्भुत हो ॥ ललना चंद मंद लखि होत कहै कवि केहि विधि हो ॥ ३ ॥ भूषन जुत युग गुल्फ निरखि मन मोहहिं हो ॥ ललना जंघा जानु सरस अति उरु छवि जोहहिं हो ॥ ४ ॥ उच्च नितम्ब सु पीन महारस आलय हो ॥ ललना कटि मृगपतिहुँ ते छीन लीन मन लालहिं हो ॥ ५ ॥ नाभी परम गभीर सु अ त छवि छाजहिं हो ॥ ललना रोमावलि चहुं पास फाँस रस राजहिं हो ॥ ६ ॥ उदर अतिहि रस रूप भूप सुत निरखहिं हो ॥ ललना त्रिवली रंग विलास चित्ताआकर्षहिं हो ॥ ७ ॥ बक्षस्थल रसधाम राम मन मोहन हो ॥ ललना तन मन सुरति ठगाय लगे दृग जोहन हो ॥ ८ ॥ बाँहु विशाल सुरम्य भुषन भल सोहहिं हो ॥ ललना कर कमलन के प्रकाश लाल मन मोहहिं हो ॥ ९ ॥ ललित कलित दग्ग्रीव सींव छवि सोहहिं हो ॥ ललना प्रीतम अति ललचाय डारि भुज जोहहिं हो ॥ १० ॥ चिबुक अधर रस रूप चूमि सुख पावहिं हो ॥ बिन ही मोल विकाय वारने जावहिं हो ॥ ११ ॥ अति लोनी शुभ नासा अधिक सुख छावहिं हो ॥ ललना गोल कपोलन निरखि हिये न समावहिं हो ॥ १२ ॥ श्रवन सु अतिहि अनूप सुकुंडल डोलहिं हो ॥ ललना चूमि झूमि रस लेहिं अधिक छवि खूलहिं हो ॥ १३ ॥ नैनमैन के बान काम रस वोरे हो ॥ ललना टेढ़ी भौंह कमान सजगसर जोरे हो ॥ १४ ॥ देखि लक्षप्रतक्ष मंद हँसि हेरेउ हो ॥ दीन्हेउ सीमढकेलिहेलिमन लीन्हेउ हो ॥ १५ ॥ एक टक रहे निहारि पलक नहिं

लावहिं हो ।। ललना छके सरस रंग चोट हिये सरसावहिं हो ॥ १६ ।। भाल विशाल सुखौर बिन्दु सहराजहिं हो ।। ललना श्याम दिठौना देखिकाल भय भाजहिं हो ।। १७ ।। केश सुदेस सुहावन अति छबि छावहिं हो ।। ललना मनहुँ काम रस फंद बिछाये सुदावहिं हो ।। १८ ।। नख सिख सुभग सरूप वहै रस धारा हो ।। ललना पैरत श्याम सुजान लहै नहिं पारा हो ।। १९ ।। सारी श्याम सु अंग रंग लहि सोहहिं हो ।। ललना बाल विभूषन ललित बलित अंग जोहहिं हो ।। २० ।। चूमि चूमि चुचुकारि मल्हाइ खेलावहिं हो ।। ललना अति हित हृदय लगाइ कंठ लपटावहिं हो ।। २१ ।। श्री सरजू जी के जनम जो मगल गावहिं हो ।। मोद मंजु सियराम महल सुख पावहिं हो २२।

* १–पद रेखता *

बधाई सरजु सरि केरी। सहेली गावो रुचि से री ॥ १ ॥ प्रेम की धार प्रगटाई। सुमानस सरसे भुवि आई ॥ २ ॥ अवध उत्साह घर घर में। उमग अनुराग सुख मन में ।। ३ ॥ गुरू की कीर्ति सुखदाई। तिहुँपुर पुत्रि से छाई ॥ ४ ॥ जेठ की पुनौ आवै जबहीं। सु उत्सव ठानैं सब तबहीं ॥ ५ ॥ देव नर नाग मुनि जेते। नयन जासेइ मुद लेते ।। ६ ।। सुमज्जन करिके शुचि वारी। देत बहु दान नर नारी ॥ ७ ॥ प्रेम रस मोद बलि जावैं। वास तव तीर नित पावैं ।। ८ ॥

* २–पद रेखता *

प्रगटी श्री मानसरनन्दनि। वरन त्रैलोक आनन्दनि ॥१॥ मासवर जेष्ठपन भाई। सुकुल पूनो है सुखदाई ॥ २ ॥ अवध में धूम है छाई। महा आनन्द सरसाई ॥ ३ ॥ सुवन्दनवार बँधवाये। सुमंगल कलश धरवाये ॥४॥

नगर की नारि जुरि आईं ॥ सुमंगल थार सजि ल्याईं ॥ ५ ॥ आरती करति सरजू की ॥ अधिक उत्साह भरजू की ॥६॥ वढ़्यो आनन्द चहुँ ओरी । सिया स्नेह सरसोरी ॥ ७ ॥ सुजस सब देव गन गावैं । कलप तरु सुमन बरसावैं ॥ ८ ॥

❀ ३–पद रेखता ❀

बधाई श्री सिया ननद केरी ॥ वहिनि प्रीतम को रस वोरी १ ॥ विनय सुनिविधि सुवन केरी । प्रगट भई मान सरसेरी ॥ २ ॥ चली सुख पाइ पितु संगै । आई श्री अवध रस रगै ॥ ३ ॥ जेष्ठ सुभ पूनो तिथि आई । समय संध्या सुमन भाई ॥ ४ ॥ साथ परिवार सह सोहैं । नगर में भूप मग जोहैं ॥ ५ ॥ श्रवन सुनि सोर सरजू के । पाप परिताप हरजू के ॥ ६ ॥ महासुख पूरि आवाजैं । दियो नृप सब वजे वाजे ॥ ७ ॥ साथ एक नभ नगर सोरै । वजत दुन्दुभि घन घोरै ॥ ८ ॥ महाधुनि जय जयति छाई । करे सुरसुमन वरसाई ॥ ॥९ ॥ पर्‌यो इक्ष्वाकु गुरु चरनन । धर्‌यो सिर धूरि मुद भरनन ॥ १० ॥ कह्यो गुरुदेव हर्षाई । करो पूजन सरित आई ॥ ११ ॥ पोडषो भांति से पूजन । कियो नृप श्रुतिहि मन मोदन ॥१२॥ आरती कीन्ह हर्षाई । वजे सुचि बाजे समुदाई ॥ १३ ॥ गगन सुर सुमन झरि लावैं । नाचि तिन वधू जस गावैं ॥ १४ ॥ मोद अवगाहि सरसावैं । सिया पिय रूप सुख पावैं ॥ १५ ॥

❀ ४–पद रेखता ❀

बधाई प्रान मन हरनी । ललित ललि लाल की करनी ॥ १ ॥ अमृत की धार सम धरनी । नवल सुरवेलि सुख भरनी ॥ २ ॥ मधुर स्वर

ताल अनुसरनी । सुमन जल प्रेम की झरनी ॥ ३ ॥ सुमंगल साज सब बरनी । नषत शुभ जोग ग्रह ढ़रनी ॥ ४ ॥ ज्ञान जनि आगि जिमि अरनी । मिटावनि जीव की जरनी ॥ ५ ॥ सरित संसार की तरनी । नसावनि दुष जनम मरनी ॥ ६ ॥ माननी नाह की परनी । संवारन घर की निज घरनी ॥ ७ ॥ प्रेम रसमोद की छरनी । अटल पद से नहीं टरनी ॥ ८ ॥

* १-पद दादरा *

अवधपुर सरजू की छवि छाई ॥
ज्ञान विराग कूल मन भावन, सद् गुन तरु समुदाई ॥ १ ॥ द्वादस भक्ति सनी मधि धारा, सुख तरंग सरसाई ॥ २ ॥ सम दम संजम नेम कमल बहु, रस रज बास सुहाई ॥ ३ ॥ भाव भवँर खंग कूजत, गुञ्जत राग सुताल बजाई ॥ ४ ॥ प्रेम मोद यह सुषमा निरखत, अपने भाग मनाई ॥ ५ ॥

* २-पद दादरा *

बधाई सरजू की सुख दाई ॥
सिय पिय अलिन सहित रस भीजे, सुनत श्रवन मन लाई ॥ १ ॥ नवल नाव पर दम्पति राजत, श्याम गौर छवि छाई ॥ २ ॥ अतर पान माला निछावरि, बाँटत सबहि बोलाई ॥ ३ ॥ पुरबासी यह कौतुक देखत, अपने भाग मनाई ॥ ४ ॥ देव सुमन बरसत जै जै करि, हरषि निशान बजाई । ५ ॥ प्रेम मोद गुरु पुत्री के गुन गाय गाय सुष पाई ॥ ॥ ६ ॥

* ३-पद दादरा *

सरजू सखि सोहैं सुमन बंगला ॥
सिय पिय छवि हिय धरि रस माती, सुख साजत नित नव विमला ॥ १ ॥

सुर तरु वर तर सुमन वेदिका, मनिमय घाट सजे गमला ॥ २ ॥ बाजत साज गान अलि करहीं, नृत्य करत मनु बहु चपला ॥ ३ ॥ देव सुमन बरसत छवि निरखत, प्रेम मोद हिय सुख भरला ॥ ४ ॥

❁ आरती ❁

सरजू सखी जी की आरती करिये। सिय पिय रंग सरस सुख भरिये ॥
कलप बृक्ष तर रतन सिहासन। तापर राजत सरित बरासन ॥
नखसिख लौं छवि अनुपम राजत। कोटिन रति मन्मथ लखि लाजत ॥
बाजत साज गान करि नाचैं। देव वधुन मह लखि रस राचैं ॥
गंग जमुन शारद कावेरी। इनहि आदि सेवहि बनि चेरी ॥
छत्र चमर व्यंजनादिक सेवा। करहिं सदा जानहिं सुख भेवा।
प्रेम मोद जय स्तुति बानी। करहिं सदा सुख सिन्धु समानी ॥

॥ बधाई सम्पूर्णम् ॥

❋ पद ❋

सरजू लेत लहरिया हो पावन मन हरिया ॥ १ ॥ श्रीवसिष्ठ मानस ते लाये, सुन्दर अवध नगरिया हो ॥ २ ॥ सीताराम विनोद करन हित, कुञ्जन लागी नहरिया हो ॥ ३ ॥ सरनन्दिनि तव तीर मिलै नित, प्रेम सुमोद बहरिया हो ॥ ४ ॥

❋ पद ❋

बधाई बाजि रही मन भाई ॥
मानस नन्दिनि प्रगट भई हैं, अवधपुरी में आई ॥ १ ॥ श्रीवशिष्ठ के भवन मनोहर, राग तान रह्यो छाई ॥ २ ॥ नभ विमान सुर थकित रहे हैं, सुमन माल बरषाई ॥ ३ ॥ मुनि पत्नी निवछावरि देहीं, जाँचक जनहि बोलाई ॥४॥ श्री प्रेम मोद सिय पिय जस, निज मुख करत सु उमग बड़ाई । ५ ॥

❋ पद ❋

नवल पलना सरयू सखी झूलैं ॥
मनि सो पान दुहूँ तट महलैं, खंभ रंग अनुकूलैं ॥ १ ॥ मुनि पत्नी सब हरषि झुलावैं, छवि निरखैं सुख मूलैं ॥ २ ॥ बाजन गान मधुर धुनि सुनि सुर. बरषत सुरतरु फूलैं ॥ ३ ॥ श्री प्रेम मोद यह छवि अवलो कहिं, नाहिं व्यापहिं भव सूलैं ॥ ४ ॥

❋ बधाई ❋

जै जै श्री सरयू महारानी ॥
कीरति रही भुवन परि पूरन, रूप छटा छहरानी ॥ १ ॥ दिव्य गुणनि रस रहस विलाशिनि, प्रीति प्रभा लहरानी । २॥ अमित परत्व सत्व सुषकारिनि,

तत्व घटा घहरानी ॥ ३ ॥ सीतलता सुचिता सौरभ मृदु माधुरि मोद घहरानी ॥ ४ ॥ सिय प्रीतम रति रीति प्रकासिनि, चंचल चित ठहरानी ॥ ५ ॥ अलि रस राज गली कुञ्जन की, गति गंभीर गहिरानी ॥ ६ ॥ शेषादिक श्रुति गावत महिमा, विथकित रहि गई बानी ॥ ७ ॥

* पद *

रंगीली झाँकि श्री सरजू की ॥
रविकुल गुरु वसिष्ठ की कन्या बर सु बहिनि प्रीतम कि ॥
महा माधुरो अंग अंग झलकत मूरति अमल अमीकि ।
दरस परस मज्जन सु पान करि मेटत ताप सु जीकी ॥
दिव्य रूप विनु श्रमहि पाई जन जात महल मनि ठीकि ।
मोद मंजु सिय पिय सेवा सुख पाय परम सुद विकि ॥

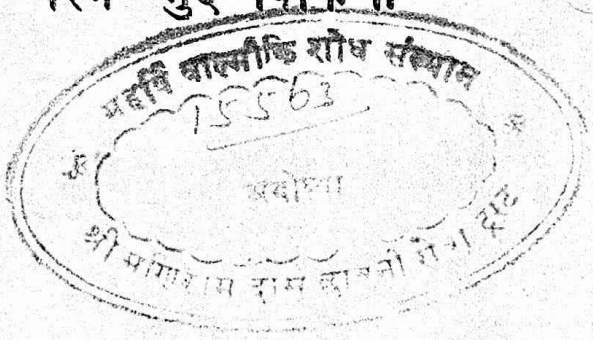

* पद *

आरती करिये बर सरिता की ।
सीतल स्वच्छ सलिल भरिता कि ॥
सरजू नाम विदित जग पावनि । मज्जन करतहि शोक नसावनि । दिव्य रूप दै महल पठावनि । सिय पिय सेवा सुख ढरिता की ॥ १ ॥ कावेरी गंगा अरु जमुना । रेवा पुन पुन सारद बरुना । इनहिं आदि सेवहिं बर चरना ॥ सिय वर सुख हित सह चरिता की ॥ मोद मंजु हित यामें मानो । बसि सरजू तट उत्सव ठानो ॥ विनु श्रम सहज रूप पहिचानो । बिपिन प्रमोद मोद महिता की ॥